UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

www.rjournals.co.in

18-19

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly | **UGC Approved** | **ISSN : 2319 - 8648**
Issue X VolIV, Sept. 2018 | **Sr. No. 64310** | **Impact Factor : 2.143**

17	धार्मीक आतंकवाद और विश्व राजनीती	विश्वनाथ हणमंतराव पवार	79
18	अज्ञेय की कहानियों में व्यक्त देश-विभाजन की त्रासदी	प्रा.आर.एम.खराडे	82
19	आधुनिक नारी की सशक्त तस्वीर - दौड	प्रा.डॉ.राजश्री भामरे	87
20	फणीश्वरनाथरेणु की कहानियोंमेंआँचलिकताकाचित्रण	प्रा. सूर्यवंशी एस. एम.	91
21	"कबीरऔरउनकीसामाजिकचेतनावर्तमान के संदर्भमें"	डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी	96
22	"भारतसरताज़ जम्मू–कश्मीर के पर्यटक–स्थलोंमेंपर्यटकऔरपर्यटन की संभावनाएं एवंचुनौतियां"	रविकुमार	100
23	आंबेडकरवाद : इतिहास लेखनातील नवीन विचार प्रवाह	डॉ. आर. एस. पारवे	112
24	मीडियाकासामाजिकदायित्व	पूजा शर्मा	115
25	जीवन काचित्रण	स. प्रा. डॉ. राजेश प्रल्हादराव आरदवाड	117

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Half Yearly
Issue X Vol IV Sept. 2018
UGC Approved
Sr. No. 64310
ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 2.143

"कबीर और उनकी सामाजिक चेतना वर्तमान के संदर्भ में"

डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी

पदव्यूत्तर हिंदी विभाग, दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

-------- (21) --------

आज के समय में हम देखते हैं कि अन्य सभी देशों के साथ –साथ विकसित हुआ है जिसके चलते आज ये आधुनिक कहलाता है। आज भूमंडलीकरण और बाज़ारवाद के चलते ये वो दौर आ गया है जब बाज़ार मनुष्य के आपसी मुल्यों और मान्यताओं में भी प्रवेश कर चुका है ।21वी सदी का समय अपनेआप में पपूरी तरह से परिपूर्ण और विकसित कहलाता है।भूलना न होगा की आज के समय में मुनष्य हमारे बचपन में सुनी उस चंदामामा की कहानी वाले चंद्रमा पर अपना बसेरा क़याम करने की चाह रख रहा है।वर्तमान में मनुष्य हर प्रकार से बदला है फिर चाहे वो सामाजिक क्षेत्र हो,राजनीतिक, आर्थिक,या धार्मिक क्षेत्र ही क्यों न हो हर क्षेत्र में काफी तेज़ गति से निरंतर विकसित होता जा रहा है।विकास की तरफ अग्रसर हमारे मुनिष्य और समाज में धीरे – धीरे कुरीतियाँ, आडम्बर, भ्रष्टाचार, रिश्वेतखोरी, साम्प्रदयिकता हज़ारों बुराइयों ने जन्म ले लिया है।हमारे पुराणिक समय के संतों की सामाजिक चेतना के प्रभावी विचार जो आज से कई समय पहले उन्होंने मानव हित के लिए मनुष्य के सामने रखे अपने समय की धड़कनों को नापने और आधुनिक समय के समाज की धड़कनों को महसूस कर जनमानस को उनके हित हेतु दशा और दिशा देने का प्रयास करते हैं। हिंदी साहितय की यदि बात करें तो हम संतों की रिर्धारित समय सीमा नहीं बाँध सकते वो इसलिए कि पहले समय में कई आडम्बर रहे जिनके चलते समय समय पर कोई न कोई नायक संत रूप ले कर मनुष्यों को उनके हितों के प्रति जागरूक करते थे।ऐसे न जाने कितने ही संतों ने उस समय हमारे समाज को बचाया और उनमें नई चेतना जागरूक की जो आज के समय को मद्देनज़र रराखते हुए हमें लग रहा है कि हमें भी उनकी जरूरत अब आ पड़ी है।

संत शब्द को अनेकों अर्थो लिया जा सकता है––अंजलि,साधु,सज्जन,धर्मात्मा, विरक्त महात्मा ––साधू, निर्मल एवम पवित्र जैसे संत स्वभाव ,संत हदय यह शब्द प्राचीन समय से चलता आ रहा है।संतों के कुछ प्रमुख हस्ताक्षरों कबीर, रैदास, मलूकदास, मीरा, जायसी आदि आते हैं।इन संतों की वाणी ने अपने समय के दिलों की धड़कनों को मापा है और इनकी वाणी भविष्य की तेज़ फड़फड़ाती नब्ज़ पर हाथ रख कर उनका ताप मापने का काम कर रही है।कबीर इन संतों में से एक हैं और अपनी प्रखरता के कारण प्रमुख हैं।जो आज 21वी सदी में भी प्रासंगिक और साकार हो उठते हैं।कबीर स्वभाव के फक्कड़ अक्खड़ और निरक्षर थे पर उनमें युग प्रवर्तक के गुण भरे हुए थे।

कबीर के समय में उत्तरी भारत के अंतर्गत हिन्दु और मुसलमान दो बड़ी जातियां निवास करती थीं।

इन दोनों जातियों की हर एक स्थिति एक दूसरों के बिल्कुल विपरीत थी,जिनके चलते इनमे वैमनस्य बढ़ गया और ऐसी का फ़ायदा दोनों धर्मों के कुछ ठेकेदारो ने उठाया और लोगों को अनेकों पाखंडों, बह्मचारों, अंधविश्वासों,और मिथ्या आडम्बरों में उलझा दिया । दोनों धर्मो में फैली इन संकीर्ण

मेहमान भी भूखा न जाए । यह वाली धरना तो अब समाज से जैसे खत्म ही हो गई है ।हमारे भारत की 'वासुदेव कुटुम्बकम' सब जान हिताय सब जान सुखाय वाली भावना अब पुरी तरह से मानव खत्म ही हो चुकी है और जिसका स्थान अब एक ही जान हिताय और एक ही जान सुखाय वाली भावना ने ले लिया है । आज पैसे ने इंसान को इतना अंधा कर दिया है कि एक भाई अपने सखे भाई का गला काटने को तनिक भी नहीं सोचता यह सब देन है आधुनिकता की और बाज़ार की । कबीर कहते हैं ––––––

"न में मंदिर न में मस्जिद,न में काबे।
न कैलाश में मोको कहाँ ढूंढे बंदे, में तो तेरे पास में।।"7

उनका लाख प्रयास रहा है कि मनुष्य ईश्वर को अपने ही भीतर खोजे और उसे पाने को यहां वहां व्यर्थ न भटके । पर आज आप देखते हैं ऐसे कहीं नहीं है आज व्यक्ति पत्थर की मूर्ति के आगे खड़ा हो कर उसे पसे चढ़ा कर यानी रिश्वेत दे कर पैसे ही मांगता है, न की सुख शांति और इज़त ।

आज इंसान टोपी या मूंछ और तिलक से पहचानअ जाता है न कि उसकी इनसानियत से । में यह नहीं कहता कि बाज़ार ने या आधुनिकता ने हमे कुछ नहीं दिया है, इन्ही की वजा से आज भारत विकसित देशों में अपनी नींव रखे हुए है । पर दूसरी तरफ ध्यान से देखा जाए तो इसके परपंच में फस कर मनुष्य बहुत कुछ ऐसे भी कर रहा है जो प्रकृति के विरुद्ध है और जिसके परिणाम घातक सिद्ध हो सकते हैं । संत साहित्य और कबीर के विचार मुनष्य के अंदर एक सकारात्मक भाव बोध पैदा करते हैं ।

वैश्वीकरण के दौर में मनुष्य के लिए संत साहित्य को मैं ऐसा समझता हूं मानो एक गूढ़ काले घने अंधेरे बंद कमरे में एक व्यक्ति काली पोशाक पहने उस कमरे में न जाने कब से एक सुर्ख काली बिल्ली को ढूंढ रहा है जो वास्तव में उस कमरे में है ही नहीं । मनुष्य को इस बात पर चिंतन करना चाहिए कि यदि कबीर प्रसांगिक न होते तो उनकी वाणी आज भी सुबह–शाम,घर–घर और घाट –घाट क्यों बजती । अगर संत साहित्य और कबीर परसिंगक न होते तो भारत में लाखों रुपए खर्च कर जहाँ–तहाँ हम हज़ारों की तादाद में एकत्रित होकर इस प्रकार उनके विचारों पर चिंतन न करते और न ही इतने बड़े स्तर पर अंतरराष्ट्रीय सेमिनार आदि करवाते ।

आधार संदर्भ :–

1 – कबीर ग्रंथावली,
2– "
3– "
4– "
5– "
6– "
7– "
8– "

Current Global Reviewer

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Edited By
Arun B. Godam
Latur, Dist. Latur-413512
(Maharashtra, India)
Mob. 8149668999

SHAURYA PUBLICATION
Latur
Publisher
Shaurya Publication

www.rjournals.co.in